

महाकाली चालीसा

दोहा 1

जय जय सीताराम के, मध्यवासिनी अम्ब।
देहु दर्श जगदम्ब अब, करो न मातु विलम्ब॥

दोहा 2

जय तारा जय कालिका, जय दश विद्या वृन्द।
काली चालीसा रचत, एक सिद्धि कवि हिन्द॥

दोहा 3

प्रातः काल उठ जो पढ़े, दुपहरिया या शाम।
दुःख दरिद्रता दूर हों, सिद्धि होय सब काम॥

चौपाई 1

जय काली कंकाल मालिनी।
जय मंगला महा कपालिनी॥

चौपाई 2

रक्तबीज बधकारिणि माता।
सदा भक्त जनन की सुखदाता॥

चौपाई 3

शिरो मालिका भूषित अंगे।
जय काली जय मद्य मतंगे॥

चौपाई 4

हर हृदयारविन्द सुविलासिनि।
जय जगदम्बा सकल दुःख नाशिनि॥

चौपाई 5

हीं काली श्रीं महाकराली।
क्रीं कल्याणी दक्षिणाकाली॥

चौपाई 6

जय कलावती जय विद्यावती।
जय तारा सुन्दरी महामति॥

चौपाई 7

देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट।
होहु भक्त के आगे परगट॥

चौपाई 8

जय ॐकारे जय हुंकारे।
महा शक्ति जय अपरम्परे॥

चौपाई 9

कमला कलियुग दर्प विनाशिनी।
सदा भक्त जन के भयनाशिनी॥

चौपाई 10

अब जगदम्ब न देर लगावहु।
दुख दरिद्रता मोर हटावहु॥

चौपाई 11

जयति कराल कालिका माता।
कालानल समान द्युति गाता॥

चौपाई 12

जय शंकरी सुरेशि सनातनि।
कोटि सिद्धि कवि मातु पुरातनि॥

चौपाई 13

कपर्दिनी कलि कल्प बिमोचनि।
जय विकसित नव नलिन बिलोचनि॥

चौपाई 14

आनन्द करणि आनन्द निधाना।
देहु मातु मोहि निर्मल ज्ञाना॥

चौपाई 15

करुणामृत सागर कृपामयी।
होहु दुष्ट जन पर अब निर्दयी॥

चौपाई 16

सकल जीव तोहि परम पियारा।
सकल विश्व तोरे आधारारा॥

चौपाई 17

प्रलय काल में नर्तन कारिणि।
जय जननी सब जग की पालनि॥

चौपाई 18

महोदरी महेश्वरी माया।
हिमगिरि सुता विश्व की छाया॥

चौपाई 19

स्वच्छन्द रद मारद धुनि माही।
गर्जत तुम्ही और कोउ नाही॥

चौपाई 20

स्फुरति मणिगणाकार प्रताने।
तारागण तू ब्योम विताने॥

चौपाई 21

श्री धारे सन्तन हितकारिणी।
अग्नि पाणि अति दुष्ट विदारिणि॥

चौपाई 22

धूम्र विलोचनि प्राण विमोचनि।
शुम्भ निशुम्भ मथनि वरलोचनि॥

चौपाई 23

सहस्र भुजी सरोरुह मालिनी।
चामुण्डे मरघट की वासिनी॥

चौपाई 24

खप्पर मध्य सुशोणित साजी।
मारेहु माँ महिषासुर पाजी॥

चौपाई 25

अम्ब अम्बिका चण्ड चण्डिका।
सब एके तुम आदि कालिका॥

चौपाई 26

अजा एकरूपा बहुरूपा।
अकथ चरित्र तव शक्ति अनूपा॥

चौपाई 27

कलकत्ता के दक्षिण द्वारे।
मूरति तोर महेशि अपारे॥

चौपाई 28

कादम्बरी पानरत श्यामा।
जय मातंगी काम के धामा॥

चौपाई 29

कमलासन वासिनी कमलायनि।
जय श्यामा जय जय श्यामायनि॥

चौपाई 30

मातंगी जय जयति प्रकृति हे।
जयति भक्ति उर कुमति सुमति हे॥

चौपाई 31

कोटि ब्रह्म शिव विष्णु कामदा।
जयति अहिंसा धर्म जन्मदा॥

चौपाई 32

जल थल नभमण्डल में व्यापिनी।
सौदामिनि मध्य अलापिनी॥

चौपाई 33

झननन तच्छु मरिरिन नादिनि।
जय सरस्वती वीणा वादिनी॥

चौपाई 34

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।
कलित कण्ठ शोभित नरमुण्डा॥

चौपाई 35

जय ब्रह्माण्ड सिद्धि कवि माता।
कामाख्या और काली माता॥

चौपाई 36

हिंगलाज विन्ध्याचल वासिनि।
अट्टहासिनी अरु अघन नाशिनी॥

चौपाई 37

कितनी स्तुति करूँ अखण्डे।
तू ब्रह्माण्डे शक्तिजित चण्डे॥

चौपाई 38

करहु कृपा सब पे जगदम्बा।
रहहिं निशंक तोर अवलम्बा॥

चौपाई 39

चतुर्भुजी काली तुम श्यामा।
रूप तुम्हार महा अभिरामा॥

चौपाई 40

खड़ और खप्पर कर सोहत।
सुर नर मुनि सबको मन मोहत॥

चौपाई 41

तुम्हरी कृपा पावे जो कोई।
रोग शोक नहिं ताकहँ होई॥

चौपाई 42

जो यह पाठ करे चालीसा।
तापर कृपा करहि गौरीशा॥

समापन दोहा

जय कपालिनी जय शिवा, जय जय जय जगदम्ब।
सदा भक्तजन केरि दुःख, हरहु मातु अवलम्ब॥